

अमरकान्त की कहानी  
‘‘जिन्दगी और जॉक’’

प्रदर्शन पटकथा – राजेश जोशी  
निर्देशक – बंसी कौल

रजुआ :

मैं.....ओह मुझे नहीं पहचाना आपने .....मैं हिन्दी के अद्वितीय कथाकार अमरकान्त की चर्चित कहानी का एक पात्र हूँ .....लेकिन मुझे आप अपने आसपास कहीं भी देख सकते हैं । मैं आपके कस्बे में , आपके शहर में यहाँ तक कि आपके मोहल्ले में भी मिल जाऊँगा.....बस आप मुझे आवाज़ लगाइये और मैं चला आऊँगा.....हाँ याद आया .....आप मुझे किस नाम से पुकारेंगे.....मेरा नाम कुछ भी हो सकता है ..... लोग अपनी सुविधा के तहत मेरा नाम ही नहीं मेरी औकात भी तय करते रहते हैं ....वो कभी मुझे रजुआ के नाम से पुकारते हैं .....कभी रजुआ साले के नाम से और कभी भगत के नाम से .....इसी तरह वो कभी मुझे चोर बना देते हैं.....और अचानक मुझ पर लात घूँसे बरसाने लगते हैं । कभी अचानक मुझ पर तरस खाने लगते हैं .....कभी अपने घर का नौकर बना देते हैं और कभी कुछ और.....। अब यहीं ..... इसी मोहल्ले में देखिये न.....मैं किसी एक घर का नहीं सारे मोहल्ले का नौकर हो गया हूँ.....हर कोइ मुझ पर अपना हक जमाता है । एक अपने घर ले जाता है तो दूसरा कहता कि हमारे यहाँ चल हम तुझे दो जून का भरपेट खाना देंगे.....जब काम सध जाता है तो तरस खाकर अक्सर अपने घर का बासी खाना मुझे दे देते हैं .....इस तरह वो अपने अपराध बोध से भी निजात पा लेते हैं कि उन्होंने एक भूखे गरीब को खाना दिया और इसके बदले अपने चार काम भी करा लेते हैं .....। मैं भी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा हूँ ... मैं बार बार उनके समाज का एक साधारण नागरिक होना चाहता हूँ लेकिन वो ऐसा होने नहीं देते ....वो मुझे हमेशा बाहरी आदमी बनाये रहते हैं .....अपनी परिधि में नहीं घुसने देते.....वो एक हद तक ही मुझे अपने दायरे में आने का मौका देंगे.....इसके बाद मैं बीमार हो जाऊँ या मर जाऊँ उन्हें फरक नहीं पड़ेगा .....लेकिन मैं इतनी आसानी से हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ..... मेरी हड्डियों में एक अजीब किस्म की ज़िद घुसी हुई है.....मैं एक बेशर्म हड्डी हूँ.....शताब्दियों से यूँ तो जिन्दा नहीं हूँ.....मैं पीछा करता ही रहता हूँ.....करता ही रहूँगा ..... मैं आसानी से मरूँगा नहीं ....मर भी गया तो ,मर कर भी वापस आऊँगा .....कहूँगा मैं मरा कहाँ वह तो सिर्फ अफवाह थी ..... एक टोटका था .....ज़िन्दा रहने के लिये ऐसे टोटके करना पड़ते हैं .....ऐसी अफवाहें उड़ाना पड़ती हैं इससे उमर बढ़ती है.....।

मैं आपसे कहता हूँ.....जरा अपने आसपास देखिये मैं वहीं कहीं किसी कोने कुचाले में , किसी खण्हर में पड़ा या मोहल्ले में लोगों की मार खाता आपको मिल जाऊँगा..... मुझे अपने समाज का नागरिक बनने दीजिये मैं बरसों से इसी काम में लगा हूँ.....इसी लड़ाई में .....।

मंच पर एक ओर कहानी कहने वाले का घर। बीच का मंच, एक मुहल्ले का खुला भाग। मंच के कोने पर क पण्डित नुमा व्यक्ति की दुकान, जो एक मकान का ही हिस्सा है। जिसमें जलाउ लकड़ी की से लेकर चुनी, सत्तू, नमक तेल आदि भी मिलता है। दुकान में एक बेंच। इस पर अक्सर तीन चार लोग बैठ कर हँसी इटख करते रहते हैं। रजुआ के गाने की आवाज आती है।

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।।

चंदन काठ के बनल खटोला

	ता पर दुलहिन सूतल हो। आये जम राजा पलंग चढी बैठा नैनन अंसुवा टूटल हो चार जाने मिल खाट उठाइन चहुँ दिसि धूं धूं उठल हो कहत कबीर सुनो भाई साधो जग से नाता छूटल हो <b>मंच पर शिवनाथ बाबू का तेजी से प्रवेश।</b> वो रहा।
शिवनाथ	
एक	क्या हुआ बाबू ? क्यों रंग में भंग डाल दिया ?
शिवनाथ	तुम लोग तो भांग पिये हो, ये चोर है साला।
दो	चोर ?
एक	पकड़ों साले को, छोड़ना मत। मारो...
कथावाचक	<b>अचानक शोर सुन कर बाहर निकलने का होता है। स्वगत अभी झपकी लगी ही थी.....यह कैसा शोरगुल ! शायद आवाज शिवनाथ बाबू के मकान की ओर से आ रही है। चप्पल पहनकर उधर को चल पड़ता है। मंच के मध्य भाग में शेर सुन कर मोहल्ले के दूसरे लोगे मंच के मध्यभाग में प्रवेश करते हैं। जहाँ कुछ लोग एक भिखमंगे को पीट रहे हैं। शिवनाथ बाबू का लड़का रघुवीर भिखमंगे के दोनों हाथों को पीछे करके पकड़े हैं।</b>
भिखमंगा	चिल्लाते हुए मैं बरई हूँ, बरई हूँ, बरई हूँ...
कथावाचक	अरे क्या बात हैं शिवनाथ बाबू ....?
शिवनाथ बाबू	<b>कहानी कहने वाले के पास आकर साला छंटा हुआ चोर है, बाबू जी! पर यह हमारा—आपका दोष है कि आदमी नहीं पहचानते। गरीबों को देखकर हमारा—आपका दिल पसीज जाता है और मौका—बे—मौका खुद्दी—चुन्नी, साग—सत्तू दे ही दिया जाता है। आपने तो इसको देखा ही होगा, कथावाचक भिखमंगे के करीब जाकर उसको देख कर असहमति में सिर हिलाता है। मालूम होता था महीनों से खाना नहीं मिला है, पर कौन जानता था कि साला ऐसा निकलेगा। हरामी का पिल्ला..! फिर भिखमंगे की ओर मुड़कर गरज पड़े अबे, बता साले, साड़ी कहाँ रखी है? नहीं तो वह मार पड़ेगी कि नानी याद आ जायेगी।</b>
भिखमंगा	अरे ओ बाबू, छुड़ा लो, बाबूजी, बरई हूँ, बरई।
शिवनाथ बाबू	साले बरई है तो क्या माथे पर .....लगता है जोर से चिल्लाने के कारण का गला बैठ गया था। देख कर भिखमंगा अपना रोना धोना छोड़ा कर आगे बढ़ता है। सब उसे पकड़ते हैं। वह अपने को छुड़ा कर शिवनाथ बाबू की पीठ ठेकता है।
भिखमंगा	हाँ बाबू उपर देखों, हाँ उपर....शिवनाथ उपर देखते हैं अब बोलो, <b>शिवनाथ थक कर चुप हो गये।</b>
कथावाचक	<b>शोर थोड़ा थम सा जाता है। पल भर को दृश्य फ्रीज होता है। पीटनेवालों ने भी इस समय पीटना बंद कर दिया था, तभी रामजी मिश्र का शोहदा पहलवान लड़का शम्भू आया ... और बोलते बोलते रुक जाता है। एक पहलवान तेजी से आता है। जूता निकाल कर हाथ में लेता है और भिखमंगे को पीटना शुरू कर देता है।</b>
एक	क्या बे साले, बता तूने क्या क्या चुराया है और चुरा कर कहाँ बेचा है ?
दो	<b>मारते हुए तू कब आया और कहाँ से आया ? आपको पता है कुछ इसके बारे में ?</b>
शिवनाथ बाबू	<b>थोड़ा खकार कर एक—डेढ़ हफ्ते से मुहल्ले में आया हुआ है। निश्चित होकर फिर बोले, लालची कुत्तों की तरह इधर—उधर घूमा करता था, सो हमारे घर में दया आ गयी। एक रोज उसे बुलाकर उन्होंने कटोरे में दाल—भात—तरकारी खाने को दे दी।</b>
एक	तो बस पसर गया।

शिवनाथ                   हॉ रोज आने लगा। खैर, कोई बात नहीं थी, आपकी दया से ऐसे दो-तीन भर-भिखमंगे रोज ही खाकर दुआ दे जाते हैं। यह घर में आने लगा तो मौका पड़ने पर एकाध काम भी कर देता था, अब यह किसको पता था कि आज यह घर से नयी साड़ी चुरा लेगा।

एक                         साड़ी ? हमार जमुना भौजी की ? **फिर से मारता है।**

कथावाचक               ऐ रूको ..... **शिवनाथ** से आपको ठीक से पता है कि साड़ी इसी ने चुरायी है?

शिवनाथ                   आप भी खूब बात करते हैं! यही पता लग गया तो चोर कैसा? मैं तो खूब जानता हूँ कि ये सब चोरी का माल होशियारी से छिपा देते हैं और जब तक इनकी कड़ी पिटाई न की जाय, कुछ नहीं बताते। अब यही समझिए कि करीब नौ बजे साड़ी गायब हुई।

कथावाचक               किसी ने इसको चुराते देखा है ?

शिवनाथ                   बाबूजी, आप पूछ तो ऐसे रहे हैं, जैसे चोरी मैंने की है। जमुना का कहना है कि उसी समय उसने इसको किसी सामान के साथ घर से निकलते हुए देखा। फिर मैं यह पूछता हूँ कि आज दस वर्ष से मेरे घर का दरवाजा इसी तरह खुला रहता है, लेकिन कभी चोरी नहीं हुई। आज ही कौन-सी नयी बात हो गयी कि वह आया नहीं और मुहल्ले में चोरी-बदमाशी शुरू हो गयी। अरे, मैं इन सालों को खूब जानता हूँ।

भिखमंगा               **चिल्लाते हुए** मैं बरई हूँ, बरई हूँ, बरई हूँ... **भागता है।**

**बीच बीच में नये लोग आते और भिखमंगे को पीटते । लोग थक गये । कुछ लोग वहाँ प्रस्थान कर जाते हैं।**

एक                         इस साले को पेड़ से बाँध दो...!

दो                         **गुस्से में** मैं तो कहता हूँ कि **पुलिस** को बुलाओ और अन्दर करवा दो .... साले को !

कथावाचक               **स्वगत** भिखमंगा भयभीत था, उसे कहीं से भी समर्थन नहीं मिल रहा था ....इसलिये वह बार बार वह अपनी जाति का नाम ले रहा था...जैसे हर जाति के लोग चोर हो सकते हैं लेकिन बरई ..... कतई नहीं.....**योगेन्द्र आता है और शिवनाथ बाबू को एक तरफ ले जाकर कोने में फुसफुसाता है। स्वगत** कुछ देर बाद शिवनाथ बाबू वापस लौटे तो चेहरे पर हवाइयाँ-सी उड़ रही थीं।

योगेन्द्र               बाबू जी, साड़ी....

शिवनाथ               **बात काट कर** वहीं तो उगलवा रहे हैं इससे।

यागेन्द्र               बाबू जी साड़ी, घर में ही मिल गई।

शिवनाथ               ऐ....अब जाके मार साले को दो हाथ

योगेन्द्र               पर, मैं ?

शिवनाथ               हॉ, तू.....जाके मार साले को। **योगेन्द्र मारने को होता ही है।** अरे अब क्या मार ही डालोगे बेचारे को ? अच्छा इस बार छोड़ देते हैं। साला काफी पा चुका है। आइन्दा ऐसा करते चेतेंगे।

एक                         अब चोरी करेगा, तो बहुत पीटेगा।

दो                         और अब कह रहे हैं छोड़ दो....!

एक                         चलो यार, अपने को क्या है ? छोड़ दो, तो छोड़ दो।

दो                         हमने कौन सा पकड़ रखा है....जो छोड़ दे।

शिवनाथ बाबू           **झेंपते हुए कथावाचक से** इस बार तो साड़ी घर में ही मिल गयी है, पर कोई बात नहीं।

कथावाचक               परन्तु आप लोगों ने तो इतनी डाट डपट और मार लगा दी?

शिवनाथ               चोर-सियार तो डाँट-डपट पाते ही रहते हैं। इस पर क्या पड़ी है, चोर-चाई तो रात-रात भर मार खाते हैं और कुछ भी नहीं बताते।**फिर बायीं आँख को दबाते हैं पड़ें,** चलिए साहब, नीच और नीबू को दबाने से ही रस निकलता है। चलिये अब रात भी गहरा गई है।

कथावाचक               हॉ, चलिये।

कथावाचक मुस्कराकर शिवनाथ बाबू को देखता है। लोग धीरे धीरे आपस में बतियाते हुए जाते हैं।

एक कमाल करते हैं शिवनाथ बाबू भी।  
दो एक तो आधी रात को इतना हंगामा कर दिया .... इतना बढ़िया भजन सुन रहे थे।  
एक सबकी नींद खराब कर दी।  
दो मैं तो यह सोच रहा हूँ, कि अगर साड़ी न मिलती तो जमुना भौजी का क्या होता ?  
एक भौजी, भईया का पाजामा पहन कर कुएँ में पानी भरती दिखती।  
भिखमंगा बेहूदा हँसी हँसते हुए बाहर जाते हैं। भिखमंगा को अकेला छोड़कर सबका प्रस्थान बड़ी कठिनाई से उठता है। अपनी चोटों को देखता है। फिर रुदन स्वर में जैसे उपरवाले से शिकायत कर रहा हो। झींगुरों की आवाज आ रही है। मैंने कुछ भी नहीं किया....फिर क्यों मारा ? किसी और गांव में रह लूंगा.... जैसे बिखरा हुआ सामन इक्का कर रहा हो। उठ कर जाने को खड़ा होता है परन्तु वहाँ भी ऐसे ही लोग हुए तो..... या इससे भी बुरे हुए तो ..... बिल्ली के रोने की आवाज सुन कर रुक जाता है। सबके जूते खाउ....? फिर चलने को उद्यत होता है। खाउ जूते लात और अपनी जाति को कलंकित करू ?। पुनः रुक जाता है। दूर कहीं कुत्तों के भौंकने की आवाज। विराम दलिदर होना सबसे बड़ा शाप है। ...और उससे बड़ा, छोटा पैदा होना। पिताजी सही कहते थे, माँ बाप जन्म दे सकते हैं, पर भाग्य नहीं लिख सकते हैं। अब यदि कष्टों से घबरा कर धरती पर पैदा होने और अपनी ललाट पर दुर्भाग्य रेखा को शाप मानते हो, तो उसे मिटाने के लिये सरयू के पानी की नहीं पसीने की बूंदें चाहिये। विराम अब भाग जाउगा तो लोग मुझे चोर ही मानेंगे.....तो क्या करू. ?... कातर स्वर में मैं चोर नहीं हूँ....पर लोग मानेंगे कैसे ? बैठ कर जैसे धूनी रम रहा हो। निर्णायक स्वर में । ....मुझे यहाँ रुकना होगा और जीतना होगा सबका मन....आज से यहाँ के आँगन, ओसारे, चबुतरे और खण्डहर मेरी छत होगी और यहाँ की गलियों मेरा आँगन।।

दृश्य : दो

कथावाचक मंच के कोने में बने खण्डहर की तरफ देखकर कथावाचक शिवनाथ बाबू के घर के सामने, सड़क की दूसरी ओर स्थित खण्डहर में, नीम के पेड़ के नीचे, वो वहाँ एक ओर इशारा करके एक दुबला-पतला काला आदमी, गन्दी लुंगी में लिपटा चित्त पड़ा था, जैसे रात में आसमान से टपककर बेहोश हो गया हो। मैंने उसे मुहल्ले के मकानों के सामने चक्कर लगाते या बैठकर हाँफते हुए देखा।  
भिखमंगा गलियों में कुछ खाता हुआ घूमता दिखाई देता है।  
एक कुछ खाता हुआ अरे ओ फिरंगी।  
भिखमंगा इधर उधर देख कर किससे ?  
एक अबे तुझ से ही कह रहे हैं। इधर आ, यह आमों की गुठली उधर फेंकते जाना। हरी मक्खियों ने कोहराम मचा दिया है।  
भिखमंगा उधर नहीं इधर फेकूंगा ।  
एक क्यों ?  
भिखमंगा उधर रस्ते में उसका घर पड़ेगा।  
एक किसका ? भिखमंगा अपने गाल पर थप्पड़ मार कर हँसता है। अच्छा ! जैसे समझ गया हो। भिखमंगा एक पत्तल में कचरा लेकर फेंकने जाता है। उसमें से एक गुठली निकाल कर खाते हुए लौट कर जाने को होता है।  
दो अरे ओ मवेशी। जरा इधर आ। उसे बासी रोटी देकर । भिखमंगा रोटी लेकर खुश होता है। लकड़ी चीर दे जरा।  
भिखमंगा यह कैसे करते हैं, बताना पड़ेगा।  
दो अबे लकड़ी चीरना नहीं जानता ? खाना बनाया है कभी ? भिखमंगा सिर हिलाता है। दो उसके हाथ में रोटी लेकर कुत्तों को डाल देता है। खाना कभी बनाया नहीं और लाट साहब की तरह खाना खाने को चाहिये। चल भाग यहाँ से। यह ले।

	एक और सूप पर गेहूँ फटकती हुई दिखती है। भिखमंगा उसके पास जाकर खड़ा होकर उसे कनखियों से निहारता है।
भिखमंगा	यह कौन है? जब वह औरत जवाब नहीं देती है। तो कहता, अच्छा, बड़की भौजी हैं। सलाम, भौजी। सीताराम, सीताराम, राम—नाम जपना, पराया माल अपना। थोड़ा पानी दोगी ?
तीन	मुँह टेढ़ा करके अरे मुआ तू कौन है ? मान न मान, मैं तेरा मेहमान । चल भाग यहाँ से । भिखमंगा खड़ा रहता है। भौजी का रिस्ता निभाना अपनी भाई की महारारु से । अब कहा तो जलते कोयले तेरी जीभ जला दूँगी नासमिटे। भिखमंगा हँसता है तो वह और चिढ़ जाती है। तू यहीं ठहर, अभी लाई । अन्दर जाती है।
भिखमंगा	अरे भौजी दीदी, जब तक तुम लौट कर आओगी, मैं पाताल का चक्कर लगा लूँगा। मैं यह चला।
भिखमंगा	भिखमंगा गाना गाता और नाचता हुआ जाता है। अम्मा मेरे भैया को भैजो री अम्मा मेरे भैया को भैजो री अरें बेटी तेरा, अरे बेटा तेरा, अरे बेटी तेरा बेटी तेरा भैया तो बाला री कि सावन आया, कि सावन आया, कि सावन आया अम्मा मेरे भैया को भैजो री तीन बाहर निकल कर।
तीन	किसी को खोजते हुई । अरे कहों गया ?
चार	अरे कहों गया ?
तीन	अरे मैं तो उस मुए को ढूँढ रही हो, भिखारी को । क्या तुम्हें भी छेड़ कर गया है ?
चार	उसके गाने की आवाज आ रही है। दो सुनती है। गाना सुन कर अम्मा मेरे भैया को भैजो री
तीन	चार से लिपट कर मुआ, पीहर की याद दिला गया और मैं चली उसकी जीभ जलाने।
चार	मैं सोच रही थी, आज मेरे बाबा की छठवी बरसी है। उसको एक जून का भोजन ही करा देती। उन्हें भी इसका सुख मिलेगा। इधर उधर देख कर अभी तो उसके गाने की आवाज आ रही थी। अंदर की ओर आवाज देकर अरे ओ मुन्ना। जा बेटा, वो जो बाबा है न, बेटा जा, जाके उसका यह खाना देआ। अरे बेटा देआ न। विराम। इस बीच भिखमंगा मंच के कोने में बने खण्डहर में यहाँ वहाँ बैठकर खाते हुए देखता है।
कथावाचक	कभी—कभी मुझे आश्चर्य होता है कि भिखमंगा की मुहल्ले में टिके रहने की हिम्मत कैसे हो गई ? अब उसके प्रति मेरी दिलचस्पी और बढ़ गयी। मैं उसको खण्डहर में बैठकर कुछ खाते या चुपचाप सोते या मुहल्ले में डग—डग सरकते हुए देखता। पहले तो बचा हुआ बासी या जूठा खाना पहले कुत्तों या गाय—भैंसों को दे देते थे, परंतु अब औरतें बच्चों को दौड़ा देतीं कि जाकर भिखमंगे को दे आये। एक बच्चा दौड़ता हुआ भिखमंगे के पास आता है। चुपके से खाने की पुड़िया उसके सामने रखता है। और तेजी से हट कर पीछे खड़ा हो जाता है। हंसने लगता है।
भिखमंगा	आ आ.....इधर बैठ ..... कहों बैठेगा ? जैसे जगह तलाश रहा। यहाँ आकर बैठो। बच्चा वापस जाता है। और वापस लौट कर नमस्ते करता है। जैसे आर्शीवाद ले रहा हो। भिखमंगा आर्शीवाद देने जैसे मुद्रा में। बच्चा वापस भाग जाता है। अकेला हँसता है। जुग जुग जियो। यह लोग भी अब मुझको कुछ—न—कुछ दे ही देते हैं। इस बीच वह उठ कर किसी दूसरे कोने में जाकर बैठता है।
कथावाचक	और....कुछ लोग तक उसे पहुँचा हुआ साधु—महात्मा तक मानने लगे। हों यह जरूर है कि किसी को मटके का नम्बर पूछते नहीं देखा। धीरे—धीरे उसने खण्डहर का

परित्याग कर दिया और आम सहानुभूति एवं विश्वास का आश्चर्यजनक लाभ उठाते हुए, जब वह किसी-न-किसी के ओसारे या दालान में जमीन पर सोने-बैठने लगा, तो लोग भी उससे हल्के-फुल्के काम भी लेने लगे। दया-माया के मामले में शिवनाथ बाबू से पार पाना टेढ़ी खीर है, किंतु भिखमंगा उनके दरवाजे पर जाता ही न था।

**तभी शिवनाथ बाबू का प्रवेश। सभी पात्र मंच पर लगे पैलस के पीछे खड़े हो जाते हैं।**

शिवनाथ बाबू      बाबूजी नमस्कार।  
 कथावाचक      नमस्कार। इधर ? असमय ?  
 शिवनाथ बाबू      अरे ऐसे ही। **भिखमंगा को देख कर** इसके पास आया था।  
 कथावाचक      **आश्चर्य से** इसके पास ?  
**तभी एक और दो वहाँ से गुजरते हैं। वह भी रुक जाते हैं।**

शिवनाथ बाबू      अब देखिये न, इसने चाहे जो भी किया, जो भुगता है, हमसे तो यह सब नहीं देखा जाता। **विराम....** दर-दर भटकता रहता है। कुत्ते-सूअर का जीवन जीता है। **भिखमंगा से** आज से इधर-उधर भटकना छोड़ आराम से मेरे द्वारे रह और दोनों जून भरपेट खा।

भिखमंगा      हओ, तो चलो **हंसता हुआ चलने के लिये तैयार हो जाता है।**  
**दोनों का प्रस्थान। एक और दो उन्हें जाते हुए देखते हैं।**

एक      क्यों आज सूरज पच्छिम से निकला है ?  
 दो      हाँ, पहलवान,  
 दो      शिवनाथ बाबू है न, बिना मतलब के अपने पुरखों का श्राद्ध भी न करें।  
 एक      यहीं तो मैं भी सोच रहा हूँ कि उल्टी गंगा के कैसे बहने लगी ?  
 दो      तो क्या सोचते है पेहलवान, चले गंगा में डुबकी लगाने ? देखेंगे कि कलकता पहुँचेंगे कि गंगोत्री।

एक      तो चलो।  
 कथावाचक      बुद्धू .....

दोनों      दोनों रुक कर क्यों बाबू जी हमसे कहीं है।  
 कथावाचक      आदर से हाथ जोड़कर नहीं महाराज, मैं तो उसे कह रहा था। **दोनों हंसते हुए शिवनाथ बाबू और भिखमंगा के पीछे जाते हुए दिखाई देते हैं।** देखा आपने, इतना भोलापन कि कोई भी स्नेह करने लगे.....हाँ, याद आया, अब ये तो पता नहीं, यह शिवनाथ बाबू के स्नेह से संभव हुआ या डर से, पर भिखमंगा उनके यहाँ स्थायी रूप से रहने लगा। उन्हीं के यहाँ उसका नामकरण भी हुआ।

**दोनों मंच के दूसरे कोने से प्रवेश कर**

शिवनाथ बाबू      चल आ जा। **भिखमंगा जगह साफ करता है।** यहाँ नहीं, वहाँ बैठ। भिखमंगा के चेहरे पर भाव, जैसे कि मैं आप के लिये ही साफ कर रहा था। जमुना, ओ जमुना, पानी भेज जरा, यहाँ एक और आया है, अब नाम क्या है तेरा ? **एक बच्ची भीतर से पानी लाती है। शिवनाथ बाबू ओटले पर बैठकर कुल्ला करने के बाद पानी पीते हुए। बच्ची पानी का लोटा भिखमंगा की तरफ बढ़ाने में संकोच करती है।** अरे दूर से दे। अंजुलि में पी लेगा। **दोनों हँसते हैं।** हाँ बता क्या नाम है तेरा ?

**जमुना का प्रवेश**

भिखमंगा      **पानी पीने के बाद मुँह साफ कर के गोपाल।**

शिवनाथ की पत्नी      कैसा नाम है ?  
 शिवनाथ बाबू      क्यों क्या गलत है इसके नाम में। हमारे, हमारे दादा का भी नाम था, कुँवर गोपाल सिंह।

एक      अरे भौजी ये तो आपका ससुरा हो गया।  
 दो      शिवनाथ बाबू के पिताजी ?  
 एक      पाँय लागू दददा जी।

शिवनाथ **खकार कर** हो हल्ला नहीं।

शिवनाथ की पत्नी वहीं तो हम कह रहे हैं, दददा जी का नाम लेंगे ? हमसे न बुलाया जायेगा ससुरे को।

शिवनाथ बाबू **जैसे सब समझ गये।** अच्छा अच्छा हम तुम्हारी बात से राजी है.....इसका कोई और नाम रखते हैं। **सब सोचते हैं ....**

पंडित जी ऐ मोढ़ा कौन महीना है ? **हॉ।** तो इसकी राशि होगी। र से नाम ठीक रहेगा। अगर सब राजी हो तो र से नाम रखना गाँव के लिये ठीक रहेगा।

एक हमें क्या दिक्कत है, शिवनाथ बाबू को राजी होना है ?

दो र से राम पूरन सिंह,

तीन अबे क्या इत्ता बड़ा नाम रखेगा, इसके पेट की तरह ? अबे छोटा नाम रख इसकी बुद्धि की तरह .....

दो **गाते हुए** मेरा नाम राजू घराना अनाम। गंगा पुर वासी !

तीन राका नहीं रख ले ?

पण्डित जी अबे चुप रहो। बामन की थाली में लात मत धरो और यजमान की सुनो। यजमान राजी तो मामला निपटा ही समझो।

शिवनाथ बाबू हमें कोई आपत्ति नहीं, हम तो राजी है....राजी.....अरे रजुआ ठीक रहेगा।

दो जुआ।

सब हॉ यह ठीक रहेगा।

एक अबे तेरा नामकरण हो गया बे रजुआ।

दो अब मुण्डन करा ले, सारे गाँव का शिवनाथ बाबू की तरफ से भोज मिलेगा।

पण्डित जी निकलो सवा रुपैया, नामकरण के।

शिवनाथ ऐ.....यह लौण्डायेई यहाँ नहीं चलेगी, चलो, भागो यहाँ से।

**लड़के एक कोने में हो जाते हैं।**

शिवनाथ चल इसे झाड़ू ला कर दे। पहले झाड़ू मार। फिर इसे गोबर लाकर लीप देना। फिर चटनी रोटी दे दोना इसे और थोड़ा गुड़ भी।

**रजुआ गुड़ सुन कर खुश हो जाता है। बच्ची अन्दर जाकर झाड़ू लाती है। भिखमंगा हाथ में लेकर झाड़ू देना शुरू करता है।**

कथावाचक सब उसके नामकरण पर हँस रहे थे, उसे समझ में नहीं आ रहा था, कि वो क्या प्रतिक्रिया दे। खैर ..... सबने उसको रजुआ कहना आरंभ किया और धीरे-धीरे यही नाम सारे मुहल्ले में प्रसिद्ध हो गया।

**भिखमंगा को झाड़ू देता देख दोनों शोहदे उसे गौर से आकर देखते हैं।**

एक यह थी शिवनाथ बाबू की दया माया।

दो मुफ्त का नौकर, देखते हैं साला कितने दिन तक टिकता है यहाँ।

कथावाचक **रजुआ थैली को उठाता है। दूसरे कोने में रखता है। बोरी को धीरे धीरे इधर से उधर ले जाता है। और बीच बीच में कुछ कुछ बोलता और गाता जाता है।**

रजुआ लोगों और पहाड़ों में कोई अन्तर नहीं है। पहाड़ कहीं आते जाते नहीं, यहाँ तक कि नहाने और दिशा तक के लिये नहीं। इसलिये बढ़ेगे नहीं, बल्कि घटेंगे.....ढूल ढूल धूम धड़ाक.....बिखरेगें पत्थर बन बन कर। तुम लोगों ने अपनी नाँव में लंगर डाल रखा है। और मेरी नाव, मैंने उस पर छोड़ दी है, उस पर। सरयू की धार जहाँ ले जाये, वहाँ चली जाये।

**तभी एक और दो का प्रवेश।**

एक अरे ओ रजुआ, देख बेटा, वो वहाँ सामने दुकान लहसुन-अदरक की गठली रखी है, हमारे साथ चला चल और बस स्टैण्ड तक पहुँचा देना।

**रजुआ स्तम्भित होकर देखता है।**

दो अरे दो आने के गटटे के लिये क्या कलदार लेगा ?

एक                    चल एक पैसा ले लेना....अच्छा दो....

छो                    अबे तू बहुत आनाकानी करने लगा है बे। **बिगड़कर कहता**, साला, तू शिवनाथ का गुलाम है? वह क्या कर सकते हैं?

एक                    अरे छोड़ ना। **रजुआ** से मेरे यहाँ बैठकर खाया कर, वह क्या खिलायेंगे, बासी भात ही तो देते होंगे। अच्छा, वापसी में चार पसेरी लकड़ी भी लेते आना।

रजुआ                **डरते हुए** पर शिवनाथ बाबू ?

दो                    उनसे छिपकर ले आईयों। ध्यान रख, तुझको पीटने का हमारा को भी उतना ही अधिकार है। पिछली बार की पिटाई याद है न ?

एक                    अरे छोड़ न। आयेगा न तू ?

रजुआ                अभी लाया।

**रजुआ आंगन बुहारने लगता है। औरते उसे दूसरे काम में लगा देती है। वह उनको छोड़कर दूसरे काम में लग जाता है।**

कथावाचक        जंगीराम से **फौरन** लौट कर आने का वायदा करके आया रजुआ शीघ्र न जा सका, क्योंकि शिवनाथ बाबू के घर की औरतों ने उसे इस या उस काम में बाँध रखा।

रजुआ                अरे लहसुन—अदरक की गठरी पहुँचानी थी, पीठे से लकड़ी भी लाना थी, अभी आया। **तेजी से बाहर आता है।** पहलवान गुसायेंगे। **जगी सामने से आता दिखाई देता है।** अरे वो तो वह रहे। **एक के सामने पहुँचता है।**

दो                    **दो थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिये, फिर गरजकर बोला**, सूअर, धोखा देता है? कह देता नहीं आऊँगा। बस स्टैण्ड पर तीन पहर गुजर गये इन्तजार करते करते। सारी अदरक सूख कर सौँठ बन गई।

एक                    अब आज मैं तुझसे दिन—भर काम कराऊँगा, देखें कौन साला रोकता है। आखिर हम भी मुहल्ले में रहते हैं कि नहीं।

दो                    अबे छोड़ झाड़ू।

शिवनाथ            अबे रजुआ, तूने आंगन नहीं लीपा अभी तक। संध्या को लोग आने वाले हैं।

दो                    अबे झाड़ू, छोड़ ।

**रजुआ जाकर शिवनाथ के हाथ में झाड़ू देने का उपक्रम करता है।**

एक                    अबे नीचे फेंक झाड़ू।

**रजुआ झाड़ू फेंक देता है। एक उसके गिरेहबान पकड़ कर ले जाता है।**

दो                    चल बे कामचोर।

कथावाचक        और सचमुच जंगी ने उससे दिन—भर काम लिया। **रजुआ काम करता दिखाई देता है।** शिवनाथ बाबू को सब पता लग गया, लेकिन उनकी उदार व्यावहारिक बुद्धि की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जाता, क्योंकि उन्होंने चूँ तक नहीं की। ऐसी ही कई घटनाएँ हुई, पर रजुआ पर किसी का स्थायी अधिकार निश्चित न हो सका। उसकी सेवाओं की उपयोग—संबंधी खींचातानी से उसका समाजीकरण हो गया।

## दृश्य : तीन

**मंच के पैनल्स पर काम करता हुआ दिखाता है।**

रजुआ                **स्वगत नौकर—चाकर** किसी के यहाँ बहुत दिनों तक टिकते नहीं थे और वे भाग—भागकर रिक्शे चलाने लगते या किसी मिल या कारखाने में काम करने लगते। दो—चार व्यक्तियों के यहाँ ही नौकर थे, अन्य घरों में कहार पानी भर देता, लेकिन वह गगरों के हिसाब से पानी देता और यदि एक गगरा भी अधिक दे देता तो उसका मेहनताना पाई—पाई वसूल कर लेता।

                         अब बूढाती हडिडियों में इतना दम भी नहीं है कि मैं तेजी के साथ पचीस—पचास गगरे पानी भर सकूँ और न ही बाजार से दौड़कर भारी पसेरी—दो पसेरी सामान ला सकूँ तो अब ऐसी हालत में कौन नौकर रखेगा मुझे, छोटा मोटा काम करा लेते है, यही बहुत है।



	अब जित्ता काम करूंगा, उतनी ही मजूरी मिलेगी न.....यदि कोई छोटा काम किया तो बासी रोटी या भात या भुना हुआ चना या सत्तू मिल जाता है और मैं वहाँ ..... <b>एक ओर इशारा करके</b> ....एक कोने में बैठकर चा <b>पड़</b> —चा <b>पड़</b> खा— <b>फाँक</b> लेता हूँ। हाँ, अगर कोई बड़ा काम कर देता हूँ तो एक समय का खाना पक्का।
	सब शनीचार मा की किरपा है, जो पेट भरवे को तो मिल रहा है। अब देखों राम मिसिर की के घर रोटी मिल ही गई न।
कथावाचक	<b>रजुआ के पास आकर</b> हूँ.....पर उसमें अनिवार्य रूप से एकाध चीज बासी भी रहती होगी और कभी—कभी तरकारी या दाल नदारत होती होगी। <b>दोनों हंसते हैं। दर्शकों से</b> कभी भात— नमक मिल जाता, जिसे वह पानी के साथ खा जाता। कभी—कभी रोटी—अचार और कभी—कभी तो सि <b>र्फ</b> तरकारी ही खाने या दाल पीने को मिलती। <b>प्रकट</b> क्यों ?
रजुआ	कोई खाना न दे पायें, तो दो—चार पैसे दे जाता है या मोटा पुराना कच्चा चावल या दाल या चार—छह आलू। कभी कभी उधार भी चलता है। <b>फिर से दोनों हंसते हैं</b>
कथावाचक	उधार ?
रजुआ	हाँ, मैं वह काम कर देता और उसके बदले में फिर किसी दिन कुछ—न—कुछ पा जाता। आपके घर चलू ? भौत दिन हो गये भौजी से बिना मिले। <b>जवाब का इन्तजार किये बिना ही।</b> चलो।
कथावाचक	हओ .... <b>दोनों कथावाचक के घर पहुँच कर</b> इसी बीच वह मेरे घर भी आने लगा था, क्योंकि मेरी श्रीमतीजी बुद्धि के मामले में किसी से पीछे न थीं। रजुआ आता और काम करके चला जाता। <b>कुरसी पर बैठता है। विराम। रजुआ एक कोने में। प्रकट</b> क्यों रे रजुआ, तेरा घर कहाँ है?’
रजुआ	<b>सकपकाकर फिर मुँह टेढ़ा करके बोला,</b> सरकार रामपुर का रहने वाला हूँ!’ और उसने दाँत निपोर दिये।
कथावाचक	गाँव छोड़कर यहाँ क्यों चला आया?
क्षरजुआ	<b>क्षणभर वह असमंजस में मुझे खड़ा ताकता रहा, फिर बोला,</b> पहले रसड़ा में था, मालिक!
कथावाचक	रामपुर में कोई है तेरा?’
रजुआ	नहीं मालिक, बाप और दो बहनें थीं, ताऊन में मर गयीं। <b>दाँत निपोर—कर हँस पड़ा।</b>
कथावाचक	उसके बाद मैंने कोई प्रश्न नहीं किया। हिम्मत नहीं हुई। <b>पत्नी का प्रवेश। पत्नी को देखते ही चहकता है।</b>
रजुआ	मलिकाइन पाय लागू।
कथावाचक	मैं <b>फौरन</b> वहाँ से सरक गया। मेरा हृदय कुछ अजीब—सी घृणा से भर उठा। <b>पत्नी से</b> सुनो देख रहा हो उसकी हिलती खोपड़ी। हँडिया की तरह <b>फूला</b> हुआ पेट और सारा शरीर निहायत गन्दा और ..... <b>पत्नी प्रश्नवाचक निगाहों से देखकर</b> मेरे कहने का मतलब है इससे कोई काम न लिया करो, यह रोगी है...
पत्नी	अरे नौकरों की कितनी किल्लत है और आप लगे रहते हैं अपने दफ्तर कचहरी में घर का काम कौन करेगा ? <b>रजुआ के पास आकर</b> अरे इसके आने से इतना आराम हो गया कि हर पहली या दूसरी तारीख को राशन, मसाला आदि मंगवा कर महीने—भर की फुरसत।
रजुआ	<b>खुश होकर पत्नी के पाँवों पर लौटते हुए।</b> ‘इनखिलाफ जिंदाबाद! महात्मा गान्धी की जै!’
पत्नी	चल हट ढीठ कहीं का।
कथावाचक	वह स्थिति में परिवर्तन से लाभ उठाते हुए ढीठ हो गया था। इसीलिए अपनी उपस्थिति जताने के लिये राजनीतिक नारे लगाता, जैसे वह कहना चाहता हो कि मैं हँसी—मजाक का विषय हूँ, लोग मुझसे मजाक करें, जिससे मेरे हृदय में हिम्मत बंधे। लेकिन यह बात साफ थी कि अब वह मुहल्ले में जम गया है। उसको खाने—पीने की चिंता नहीं है।
रजुआ	मलिकाइन, थोड़ा नमक होगा, रामबली मिसिर के यहाँ से रोटियाँ मिल गयी हैं, दाल बनाऊँगा।’

कथावाचक	इतना ही नहीं, अब वह मुहल्ले-भर से शह पा रहा है। लोग अब उससे हँसी-मजाक भी करने लगे हैं और उसे मारे-पीटे जाने का किंचित्त मात्र भी भय नहीं। <b>पतिया की स्त्री का प्रवेश।</b>
पत्नी	कहाँ रह गई थी ? स्त्री चुप रहती है। रजुआ को नमक देते हुए, 'रजुआ, सच बताना, तुझे नहाये हुए कितने दिन हो गये?'
रजुआ	खिचड़ी की खिचड़ी नहाता हूँ न, मलिकाइनजी! नमक लेकर बोला। पतिया की स्त्री हँसती है।
रजुआ	देढ़ा मुँह करके बोला सलाम हो भौजी, समाचार ठीक है न। बेमतलब हँसने हुए
पतिया की बहू	दूर हो पापी, समाचार पूछने का तेरा ही मुँह है? चला जा, नहीं तो जूठ की काली हाडी चलाकर वहाँ मारूँगी कि सारी लफंगई निकल जायेगी पीछे के रास्ते। <b>रजुआ हँसते हुए भाग गया।</b>
भिखमंगा	चंदन काठ के बनल खटोला ता पर दुलहिन सूतल हो। आये जम राजा पलंग चढी बैठा नैनन अंसुवा टूटल हो
कथावाचक	<b>पत्नी से देख रही हो रजुआ की हरकते।</b>
पत्नी	अब तो यह उसकी आदत हो गयी।
<b>दृश्य - चार</b>	<b>सभी सूत्रधार की तरह खड़े होकर।</b>
तीन	वह पर रास्ते में चौके के बाहर किसी औरत को बर्तन मँजते देखले तो सूरज कि किरण की तरह वहाँ पहुँच जाता है।
चार	रजुआ। मुहल्ले की छोटी जातियों की औरतों से उसने भौजाई का संबंध जोड़ लिया है।
पंडित	उनको देखकर वह कुछ छेड़खानी कर देता है और बदले में इसे भारी भरकम गालियाँ-झिड़कियाँ सुनने को मिल जाती हैं। फिर वह गधे की भाँति ढीचूँ-ढीचूँ करने लगता है।
पाँच	अरे, पक्का ढीठ हो गया है।
पंडित	अरे वो किसी को दरवाजे पर बैठे हुए या कोई काम करते हुए देख लेता तो एक-दो मिनट के लिए वहाँ पहुँच जाता है।
एक	फिर करता क्या है ?
पंडित	अरे बेहया की तरह हँसकर कुशल-क्षेम पूछता और अंत में झिड़की-गाली सुनकर किलकारियाँ मारता हुआ वापस चला जाता।
दो	धीरे-धीरे वह इतना सनक गया है कि किसी जवान स्त्री को देखकर, चाहे वह जान-पहचान की हो या न हो, दूर से ही हिचकी दे-देकर किलकने लगता।
एक	हाँ, यह तो मैंने भी गौर किया है, कि हमारी लुगाईयों से ज्यादा ही रिश्ता निभाने लगा है। साला।
दो	तभी तो लोग सही कहते हैं, रजुआ साला।
कथावाचक	और संभवतः इसी कारण लोग उसे रजुआ से "रजुआ साला" कहने लगे। अब कोई बात कहनी होती, कितने गंभीर काम के लिए पुकारना होता लोग उसे रजुआ साला कहकर बुलाते और अपने काम की फरमाइश करके हँस पड़ते। उनकी देखा-देखी लड़के भी ऐसा ही करने लगे, जैसे "साला" कहे बिना रजुआ का कोई अस्तित्व ही न हो। और इससे रजुआ भी बड़ा प्रसन्न था, जैसे इससे उसके जीवन की अनिश्चितता कम हो रही हो और उस पर अचानक कोई संकट आने की संभावना संकुचित होती जा रही हो।
दो	देख साले की कितनी लम्बी उम्र है।

तीन रजुआ, तू नहीं मरने का अभी। साला हम लोगों को पहुँचा कर आयेगा।  
सब लोग हँसते हैं। एक रजुआ को चिढ़ाते हैं।

एक क्यों बे, रजुआ साला शादी करेगा ?  
रजुआ हँसता है। कभी जेब से निकालकर कोई चीज खाता है। कुए के पास जाकर ....नारे लगाता है।....

रजुआ इनखिलाफ जिंदाबाद! महात्मा गान्धी की जै!' कबीर का पद गाता है। गाते हुए वह कही नहीं देखता। मुँह टेढ़ा कर करके जमीन की तरफ देखता है।

कबीर का पद साधो यह तन ठाठ तंबूरे का  
पाँच तत्व का बना तंबूरा तार लगा नवतूरे का।  
साधो यह तन ठाठ तंबूरे का  
ऐंचत तार मरोरत खूँटी निकसत राग हजूर का,  
टूटा तार बिखर गई खूँटी हो गया धूर मधूरे का।  
साधो यह तन ठाठ तंबूरे का  
या देही का गर्व न कीजै उडि गया हंस तंबूरे का,  
कहत कबीर सुनो भई साधो अगम पंथ कोई सूर का।  
साधो यह तन ठाठ तंबूरे का

## दृश्य - पाँच

कथावाचक

दर्शको से दफतर से आने और नाश्ता-पानी करने के बाद मैं हमेशा हवाखोरी के लिये टहलने निकल जाता हूँ और रेलवे लाइन पकड़कर बांसडीह की ओर जाता हूँ। पत्नी ने पूछा कटहर नाला जाओगे ? मैंने कहा, नहीं, मुझे देर हो गई है, इसलिये प्लेटफार्म का ही चक्कर लगाकर वापस लौट आऊँगा।

जब मैं टहलने निकला तो मेरा ध्यान रजुआ की ओर गया, वह भी उधर ही जा रहा था। संभवतः कटहर नाला जा रहा हो, जैसे कोई गोपनीय बात बता रहे हो पर रजुआ कटहरनाला नहीं गया, बल्कि जी.आर.पी. की चौकी के पास कुछ ठिठककर खड़ा हो गया। जिज्ञासा बढ़ाते हुए क्या वह किसी मामले में पुलिसवालों के चक्कर में आ गया है? चौकी के सामने एक बेंच पर बैठे पुलिस के दो-तीन सिपाही कोई हँसी-मजाक कर रहे थे और उनसे थोड़ी ही दूरी पर नीचे एक नंगी औरत बैठी हुई थी। रजुआ उस पगली के पास जाकर कभी शंकित आँखों से पुलिसवालों को देखता, फिर मुँह फैलाकर हँस पड़ता और पगली को ताकने लगता।

रजुआ अत्यंत ही प्रसन्न होकर हँसते हुए पुचकारती आवाज में पूछा क्या है पागलराम, भात खाओगी?

दो पुलिस वालों का ध्यान जाते ही वे रजुआ पर झपटते हैं।

पुलिस 1 कौन है बे साला, चलता बन, नहीं तो मारते-मारते भूसा बना दूँगा!

रजुआ मालिक, हम रजुआ

पुलिस 2 हम बताये तुझे मटका जुआ।

रजुआ मालिक हमारा नाम है रजुआ।

पुलिस 1 भाग जा साले, गिद्ध की तरह न मालूम कहाँ से आ पहुँचा! सभी ठहाका मारकर हँस पड़े।

पुलिस 2 अब इस पगली का क्या करें ? खिलाना पिलाना पड़ेगा अलग और रात को इसकी चौकीदारी कौन करेगा ?

**विराम**

पुलिस 1 एक काम करे इसकी सुपर्दगी बना दे ।तो दे आवाज उस साले को।

कथावाचक मैं यह सुनते ही जल्दी-जल्दी प्लेटफार्म से बाहर निकल गया। किंतु, मामला यहीं समाप्त नहीं हो गया। घर आकर खाट पर लेट गया।

कथावाचक घर के बाहर पड़ी खाट पर लेट जाता है। तभी उसकी पत्नी का प्रवेश।

पत्नी	<b>मुस्कुराती हुई।</b> जरा जल्दी से बाहर आइए तो, एक तमाशा दिखाती हूँ। जरा जल्दी उठिए।'
कथावाचक	उठकर बाहर झांक कर देखता है। रजुआ स्टेशन की नंगी पगली के आगे-आगे आ रहा था। पगली कभी इधर-उधर देखने लगती या खड़ी हो जाती तो रजुआ पीछे होकर पगली की अंगुली पकड़कर थोड़ा आगे ले जाता और फिर उसे छोड़कर थोड़ा आगे चलने लगता तथा पीछे घूम-घूमकर पगली से कुछ कहता जाता। हा, इसी पगली से तो बात कर रहा था वो पुलिस चौकी में
पत्नी	क्यों ? वह इसे कहाँ ले जायेगा। खुद का तो रहने का ठिकाना नहीं है। अब इसे लाया मुँहजला
कथावाचक	वो देखों, वह पगली को सड़क की दूसरी ओर स्थित क्वार्टरों की छत पर ले जा रहा है। वह गया। ये क्वार्टर वे एक-दूसरे से सटे हैं और उनकी छतें भी खुली हैं।
पत्नी	वहीं तो, वहाँ मुहल्ले भर के फुरसतिया जाड़े में धूप लिया करते हैं और गर्मी में लावारिस लफंगे सोया करते हैं। हे भगवान। <b>इस बीच रजुआ प्रकट होता है और तेजी से एक तरफ निकल जाता है। थोड़ी देर में खाने का सामान लेकर आता है।</b>
कथावाचक	देखों रजुआ नीचे उतर रहा है।
पत्नी	पर पगली को कहाँ छोड़ आया। वो तो उसके साथ नहीं है।
कथावाचक	<b>दर्शको से</b> हम लोगों की उत्सुकता बढ़ गयी थी कि देखें, वह आगे क्या करता है। रजुआ तेजी से स्टेशन की ओर गया तथा कुछ ही देर में वापस भी आ गया। वह एक दोना लेकर वह ऊपर चढ़ गया और हम समझ गये कि वह पगली को खिलाने के लिए बाजार से कुछ लाया है। इसके बाद दो-तीन दिन तक रजुआ को मैंने मुहल्ले में नहीं देखा। उस दिन की घटना से हृदय में एक उत्सुकता बनी हुई थी।
<b>दृश्य - छः</b>	
कथावाचक	<b>पत्नी से,</b> क्या बात है, रजुआ आजकल दिखायी नहीं देता। अब यहाँ नहीं आता क्या?
पत्नी	<b>चौंककर</b> अरे, आपको नहीं मालूम, उसको किसी ने बुरी तरह पीट दिया है और वह बरन की बहू के यहाँ पड़ा हुआ है।
कथावाचक	<b>धीमे स्वर में पूछा।</b> क्यों, क्या बात है?
पत्नी	रजुआ उस पगली को छत पर छोड़ नरसिंह बाबू के यहाँ काम करने लगा। नरसिंह बाबू की स्त्री बताती हैं कि वह उस दिन बड़ा गंभीर था और काम करते-करते चहककर जैसे किलकारी मारता है, वैसे नहीं करता था।
कथावाचक	उसकी तबीयत ठीक नहीं होगी?
पत्नी	अरे उसका मन काम में नहीं लगता था। वह एक काम करता और मौका देख कोई बहाना बनाकर क्वार्टर की छत पर जाकर पगली का समाचार ले आता। और पता है जब उसे खाना दिया तो उसने वहाँ भोजन नहीं किया,
कथावाचक	फिर ?
पत्नी	उसने खाने को एक कागज में लपेटकर अपने साथ ऊपर छत पर ले गया। रात के करीब ग्यारह बजे की बात है। रजुआ जब ऊपर पहुँचा तो.....
कथावाचक	तो....क्या ?
पत्नी	कोई मुआ पगली के पास सोया हुआ था। जब रजुआ ने मना किया तो उस लफंगे ने रजुआ को खूब पीटा और पगली को लेकर कहीं दूसरी जगह चला गया।'
कथावाचक	<b>क्रोध से</b> तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ?'
पत्नी	<b>हँसते हुए</b> 'बरन की बहू बता रही थी। <b>रजुआ ने दाढ़ी बढ़ा ली है। रजुआ एक तरफ से प्रवेश और गाते दूसरी तरफ से प्रस्थान।</b> गगन घटा घहरानी साधे पूरब दिस से उठी है बदरिया रिमझिम बरसत पानी

गगन घटा घहरानी , साधो , गगन घटा घहरानी .  
 पूरब दिसि से उठी बदरिया , रिमझिम बरसत पानी .  
 आपन —आपन मेंड़ सम्हारो , बह्यो जात यह पानी .  
 मन के बैल , तुरत हरवाहा , जोत खेत निरबानी .  
 दुबिधा दूब छोल करु बाहर , बोव नाम को घानी .  
 जोग —जुगुत करि करु रखवारी , चर न जाय मृग घानी .  
 बाली झारि , कूटि घर लावे , सोई कुसल किसानी .  
 पाँच सखी मिलि कीन रसोइया , एक —से —एक सयानी .  
 दूनो धार बराबर परसे , जेवे मुनि और ग्यानी .  
 कहत कबीर सुनो भाई साधो , यह पद है निरबानी .  
 जो या पद को परिचे पावे , ताको नाम विज्ञानी

## दृश्य - सात

मंच पर सभी ग्रामीण आजाते हैं। एक कोने में बैठ जाते हैं।

कथावाचक तुमने देखा ? आजकल उसका गधे की भांति हिलकना—किलकना बंद हो गया।  
 पत्नी हों

कथावाचक रजुआ ने आजकल दाढ़ी क्यों रख छोड़ी है?  
 पत्नी मुझे क्या मालूम ?  
 कथावाचक अरे भई, भाई है तुम्हारा ?  
 पत्नी **मुस्कराकर** वह मुझसे मलिकाईन कहता है और बाकी सबसे भौजाई ।  
 कथावाचक तुम्हें तो सारे महल्ले की खबर रहती है ?  
 पत्नी आजकल वह भगत हो गया है। बरन की बहू को उसके कृत्य की सजा देने को उसने दाढ़ी बढ़ा ली है और रोजाना शनीचरी देवी पर जल चढ़ाता है।

कथावाचक पिछले कुछ महीनों से रात को बरन की बहू के यहाँ ही सोता था और उससे बुआ का रिश्ता भी उसने जोड़ लिया था।

पत्नी इसी विश्वास के कारण तो रजुआ दो—चार आने, जो कुछ कमाता, वह अपनी बुआ के यहाँ जमा करता जाता। इस तरह करते—करते दस रुपये तक इकट्ठे हो गये हैं।

कथावाचक दस रुपये ?  
 पत्नी हाँ, एक बार उसने बरन की बहू से अपने रुपये मांगे तो वह इंकार कर गयी कि उसके पास रजुआ की एक पाई भी नहीं।

रजुआ **कातर स्वर में** अरे मैं तो झट से संबंध बना लेता हूँ। खून से गाढ़ा संबंध। मा के जने का नहीं, इस धरती पर का सबसे आसान संबंध, अटूट संबंध। प्रेम का संबंध। बिना यह जाने कि यह मेरे लिये क्या करेगा, क्या नहीं, बिना मतलब का संबंध। **प्रश्न पूछते हुए** कभी रहे हो किसी पेड़ के नीचे? बिना इसकी चिन्ता किये, जो पथिक ठहरा है, वह जल चढ़ा कर जायेगा या नहीं, बिना इसकी चिन्ता किये वह पेड़ देता है सबको छाया।

**सबके सामने दौड़ दौड़ कर** अरे जब मैं सबको भौजी पुकारता तो लोगों की लोक—लाज खतरे में आजाती। लुगाईया जलती लकड़ी से जीभ जलाने की धमकी देती। तब मैंने जोड़ा रक्त का संबंध। **विराम सुबकते हुए** सभी को भौजी की जगह दीदी बोलने लगा। **उपहास के स्वर में** बदले में पूरा गाँव मुझे साला। साला बनते ही जैसे मैं सबका नौकर हो गया। सबको अधिकार मिल गया मुझ पर रौब जमाने का।

**शान्त स्वर में दार्शनिक अंदाज में** मैं मुस्कुरा देता और यह सोच कर भूल जाता है कि इन मेहनती लोगों को मुझे गाली बकने में आनन्द आता है, तो ले ले आनन्द, इसी बहाने पुण्य कमा कर अपना दलिदर दूर कर लू। ताकि भगवान के सामने अपना लेखा—जोखा देते समय किसी के सामने दर दर न भटकना पड़े।

**मुस्कुराते हुए** इस प्रेम और विश्वास के कारण दलिदर दूर करने के चक्कर में यहाँ दर दर भटकने की घड़ी आ गई। जैसे चिरैया तिनके तिनके जमा करती है, वैसे ही मैंने एक एक छदाम इकट्ठा की। अपने लिये...अपने अन्त समय के लिये..... हमेशा जब भी शिवनाथ बाबू, जंगीराम, बाबू साहब पैसा देते तो मैं बरन की बहू के पास जाता, और उसको दे आता। **गुस्से से** मेरी ही मति मारी गई थी, अरे जब बिना लगन की नाव खड़ी थी, उसे बँधा मैंने, भगवान दिया एक पौन पर.....धपाक। **रोने लगता है।**

मेरा देह तप रही है। कण्डों से निकली बाटी की तरह। क्या मुझे मालूम नहीं है कि किसने यह खेल खेला है। जादू टोना तुम ही नहीं, हम भी जानते हैं। हम भी भगत है, भगत **छुप होता है। इधर उधर देखता है। पानी ला कर हाथ में अंजुलि बना कर रखता है।**

सरयू माता की सौगंध जब तक बरन की बहू को कोढ़ न **फूटेगा**, मैं दाढ़ी नहीं मुड़ाऊँगा। **निर्णायक स्वर में** आज से बस एक काम, शनीचरी देवी पर रोज जली चढ़ाना। **सबको सुनाते हुए** शनीचरी बहुत चलती देवी हैं। **चेतावनी के अन्दाज में सबको सुनाते हुए** अरे, एक महीने में ही बरन की बहू **फूट-फूटकर** मरेगी।

**सब ग्रामीण काँप जाते हैं और इधर उधर डर के मारे भाग जाते हैं।**

## दृश्य : आठ

कथावाचक	पण्डित जी की दुकान। सामने बेंच पर 5-7 लोग जमें हैं। बीच बीच में <b>व्हाके</b> लगा रहे हैं। पता नहीं, उसका ज्वर टूटा कि नहीं। मैंने जानने की कोशिश भी नहीं की। बीमार तो वह सदा ही का था। सोचा, शायद उतर गया हो, क्योंकि काम तो वह उसी तरह कर रहा था। न वह उतना चहकता था, न उतना बोलता था।
पंडित	सही बोले बाबू आप। वह अधिक गंभीर और सुस्त हो गया। उसने धर्म कर्म में अपनी लौ लगा ली है। शनीचरी देवी की मन्नत मानी है, बड़ा भगत है उनका।
एक	अच्छा पंडित जी, हम भक्तों का भी ध्यान रखो, ठण्डा पानी देना। <b>दो से</b> आज रात गर्मी इतनी थी कि आँगन में दम घुटा जा रहा है।
दो	मैं तो रात को चारपाई को घसीटते हुए <b>कुएँ</b> के पास ही ले गया।
एक	उमस तो यहाँ भी है, पर आँगन से कम।
दो	थोड़ी शांति मिली ?
	<b>रजुआ का प्रवेश</b>
एक	अरे रजुआ, तेरे चेहरे की जो चमक दमक
दो	जो चुस्ती और फुरती कहीं गायब हो गई ?
एक	दाढ़ी भी बढ़ी ली है, लगता है कुछ गड़बड़ है ?
रजुआ	हाँ तबीयत ढीली हो गई है, एक चाय तो बोल दो।
एक	पंडित जी, रजुआ को चाय दो और कल की कथा पूरी करो।
कथावाचक	उसकी दाढ़ी जैसे-जैसे बढ़ती गयी, रजुआ के धर्म-प्रेम का समाचार भी <b>फैलता</b> गया। निचले तबके के लोगों में अब वह "रज्जू भगत" के नाम से <b>पुकारा</b> जाने लगा। अक्सर उनकी मजलिसें रात को पंडितजी की दुकान के आगे जमतीं और रजुआ भूत-प्रेत बरन-डीह के महत्व पर प्रकाश डालता और झाड़- <b>फूंक</b> , मंत्र-जप की महत्ता समझाता। वे नाना प्रकार की शंकाएँ प्रकट करते और रजुआ उनका समाधान करता।
पंडितजी	<b>चाय भरकर देता है</b> ले रज्जू भगत, <b>सब से कथा कहने के अन्दाज में</b> गोसाईंजी का कह गये हैं? महाबीरजी समुन्दर में कूदते हैं तो ताड़का महारानी का कहती हैं?
	<b>कथावाचक भी सैर केबाद दुकान पर आकर रुक जाता है।</b>
रजुआ	सुनो-सुनो, <b>तत्काल जोश से</b> 'बजरंगबली बड़े जबर थे। वह समुंदर में कुछ दूर तक तैर लेते हैं तो उनको ताड़का महारानी मिलती हैं। ताड़का महारानी अपना रूप दिखाती हैं तो बजरंगबली किससे कम हैं? ये मियाँ एढ़े तो हम तुम से ड्यौढ़े, बजरंगबली भी उतने ही बड़े हो जाते हैं। इसके बाद ताड़का महारानी और बड़ी हो जाती हैं तो बजरंगबली मच्छर बनकर ताड़का महारानी के कान से बाहर निकल आते हैं।'

एक आदमी रजुआ	तो ए रज्जू भगत, गान्ही महात्मा भी तो जेहल से निकल आते हैं? सुनो-सुनो, गान्ही महात्मा को सरकार जब जेहल में डाल देती है तो एक दिन क्या होता है कि सभी सिपाही-प्यादा के होते हुए भी गान्ही महात्मा जेहल से निकल आते हैं और सबकी आँखों पर पट्टी बंधी रह जाती है। गान्ही महात्मा सात समुंदर पार करके जब देहली पहुँचते हैं तो सरकार उन पर गोली चलाती है। गोली गान्ही महात्मा की छाती पर लगकर सौ टुकड़े हो जाती है और गान्ही महात्मा आसमान में उड़कर गायब हो जाते हैं।'
कथावाचक	इससे पहले महात्मा गाँधी की मृत्यु का ऐसा दिलचस्प किस्सा मैंने कभी नहीं सुना, यद्यपि गाँधीजी की हत्या हुए चार वर्ष गुजर गये थे। <b>विराम</b> लेकिन इतनी धार्मिक चर्चाएँ करने, शनीचरी देवी पर जल चढ़ाने तथा दाढ़ी रखने के बावजूद उसकी मनोकामना पूरी न हुई।
एक रजुआ	अच्छा यह बता कि ताड़का बड़ी है या शनीचरी ? शनीचरी डोमिन थी, डोमिन। अपने जमाने की एक प्रचण्ड डोमिन। ताड़का की तरह लम्बी-तगड़ी और लड़ने-झगड़ने में उस्ताद। वह किसी से भी नहीं डरती थी और नित्य ही किसी-न-किसी से मोर्चा लेती थी एक बार किसी लड़ाई में एक डोम ने शनीचरी की खोपड़ी पर एक लट्ट जमा दिया जिससे उसका प्राणांत हो गया। लेकिन एक-डेढ़ हफ़्ते बाद ही उस डोम को चेचक निकल आयी और वह मर गया। लोगों ने उसकी मृत्यु का कारण शनीचरी देवी का प्रकोप समझा। डोमों ने श्रद्धा में उसका चबूतरा बना दिया और तब से वह छोटी जातियों में शनीचरी माता या शनीचरी देवी के नाम से प्रसिद्ध हो गयी थी। अपने भक्तों की बात सुनकर, वो वहाँ से, गगन से बैठकर अपने बाण से निशाना भेदती है। अपने भक्तों के दुखों को हरती है।
भजन	गगन की ओट निशाना है। दाहिने सूर चंद्रमा बांये, तिनके बीच छिपाना है। तन की कमान सुरत का रोदा, सब्द-बान ले ताना है। मारत बाण बेधा तन ही तन, सतगुरु का परवाना है। मारयो बाण घाव नहीं तन में, जिन लागा तिन जाना है। कहै कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है॥
<b>दृश्य : नौ</b> कथावाचक	हाँ भयानक गरमी जो है।
पत्नी	गड्डे तथा बम पुलिस की गली में, जो शहर के अत्यधिक गंदे स्थान थे, में हैजे की कई घटनाएँ हो हुई हैं।
कथावाचक	तो तुम क्यों परेशान हों।
पत्नी	<b>चिंतातुर स्वर में</b> अरे, जानते नहीं, रजुआ को हैजा हो गया है।'
कथावाचक	अगर उसे हैजा न होगा तो और किसको होगा। <b>प्रकट उदासीन स्वर में</b> जिन्दा है या मर गया।
पत्नी	क्या बतायें, मेरा दिल छटपटाकर रह गया। वहीं खण्डहर में पड़ा हुआ है। कै-दस्त से पस्त हो गया है। लोग बताते हैं कि आध-एक घंटे में मर जायेगा।'
कथा वाचक	कोई दवा-दारू नहीं हुई?'
पत्नी	कौन उसका सगा बैठा है दवा-दारू करता। शिवनाथ बाबू के यहाँ काम कर रहा था, पर जहाँ उसको एक कै हुई कि उन लोगों ने उसको अपने यहाँ से खदेड़ दिया। फिर वह रामजी मिश्र के ओसारे से जाकर बैठ गया, लेकिन जब उन लोगों को पता लगा तो उन्होंने भी उसको भगा दिया। उसके बाद वह किसी के यहाँ नहीं गया, जाकर खण्डहर में पेड़ के नीचे पड़ गया।'
कथावाचक	<b>व्यंग्य से</b> तुमने अपने यहाँ बुला लिया होता ?'



पत्नी	स्तम्भित होकर बिगड़कर मैं उसे यहाँ बुलाती, कैसी बात करते हैं आप? मेरे भी बाल-बच्चे हैं, भगवान न करे, उनको कुछ हो गया तो?’
कथावाचक	हँसते हुआ खड़ा हो उठता है। दरवाजे की तरफ बढ़ कर। जरा देख आऊँ,
पत्नी	गिड़गिड़ाने के स्वर में आपके पैरों पड़ती हूँ, उसको छुड़एगा नहीं और झटपट चले आइएगा।
कथावाचक	कथावाचक खण्डहर की तरफ जाता है। जहाँ दो-तीन व्यक्ति सड़क के किनारे खड़े होकर रजुआ को निहार रहे थे।
कथावाचक	अरे आप लोग कौन है। सेवा संघ से आये है।
व्यक्ति	अरे नहीं, हम तो रास्ते चलते मुसाफिर है, इसकी की दशा देखकर खड़े हो गये। उसका शरीर कै-दस्त से लथपथ है देखिये छाती की हड्डियाँ और उभर आयी है।
कथावाचक	हाँ, पेट तथा आँखें पिचककर धंस गयी थीं और गालों में गड़हे बन गये थे। आँखों के नीचे भी गहरे काले गड़हे दिखाई दे रहे हैं।
व्यक्ति	मुँह ऐसा खुला है, जैसे..... वह मर गया है,
कथावाचक	सांस देखते हैं। भगवान का शुक्र है उसकी सांस धीमे-धीमे चल रही है। आवाज लगाई। ‘रजुआ?’
व्यक्ति	उसको किसी बात की सुध-बुध नहीं है।
कथावाचक	अब मैं क्या करू ?
शिवनाथ	शिवनाथ बाबू बगल में आकर खड़े हो गये
शिवनाथ	धीरे से ही कान्ट सरवाइव-यह बच नहीं सकता।’
कथावाचक	कथावाचक ने इशारा किया कि चलिये इसे उठा ले चलते हैं, परन्तु शिवनाथ बाबू तेज चाल में घर की ओर निकल गये।
	दर्शकों से शिवनाथ बाबू पर तो मुझे गुस्सा आ ही रहा था, लेकिन अपने ऊपर भी कम झुंझलाहट न थी। कभी जी होता था कि जाकर घर बैठ रहूँ, जब और लोगों को मतलब नहीं तो मुझे ही क्या पड़ी है। अपने आप से लेकिन उसे यों अपनी आँखों के सामने मरते हुए नहीं देखा जाता था। पर मैं उसका इलाज भी क्या करवा सकता था? मैं लगभग सौ रुपये वेतन पाता था, इसके अलावा महीने का अंतिम सप्ताह था, मेरे पास एक भी पाई नहीं थी। पर उसे अस्पताल भी तो भिजवाया जा सकता है? अचानक मन में विचार कौंधा, मेरी झुंझलाहट जैसे अचानक दूर हो गयी और मैं घूमकर तेजी से अस्पताल रवाना हो गया।
	दर्शकों से अस्पताल पहुँचकर मैंने संबंधित अधिकारियों को सूचित किया। वहाँ से अस्पताल की मोटरगाड़ी पर अस्पताल से आये लोगों ने उसको गाड़ी पर लाद दिया। रजुआ की साँस अब भी चल रही थी। दो लोग उसे उठा कर ले जाते हुए दिखाते हैं।
	कथावाचक जैसे उन्हें जाते हुए देखता है। जब गाड़ी चली गयी तो मैंने संतोष की साँस ली जैसे मेरे सिर से कोई बड़ा बोझ हट गया हो।
व्यक्ति	रजुआ बच नहीं सकता है
कथावाचक	परन्तु वह अभी मरा भी नहीं। हाँ, यदि अस्पताल पहुँचने में थोड़ा भी विलम्ब हो गया होता तो बेशक काल के गाल से उसकी रक्षा न हो पाती। किंतु उसकी हालत बेहद खराब थी। अस्पताल में वह चार-पाँच दिन रहा, फिर वहाँ से बरखास्त कर दिया गया। वह एकदम दुबला-पतला हो गया था। मुश्किल से चल पाता और जब बोलता तो हाँफने लगता। न मालूम क्यों, वह अस्पताल से सीधे मेरे घर ही आया।
	रजुआ के कपड़े बदले हुए धीरे धीरे आता है। कथावाचक दौड़ कर उसे पकड़ कर अपने घर की तरफ ले जाता है। रजुआ नीचे बैठता है। तभी पत्नी बाहर निकल कर आती है।
पत्नी	कौन है ?
कथावाचक	रजुआ।
पत्नी	अब इस दलिददर को कहाँ ले आये।
कथावाचक	अब ज्यादा बवाल न करो।



पत्नी	आप को तो समझ है नहीं, अरे इसके रहने से घर में किसी को हैजा न हो जाय।
कथावाचक	दो-चार दिन उसे पड़ा रहने दे, फिर वह अपने-आप ही इधर-उधर आने-जाने तथा काम करने लगेगा।
पत्नी	मुफ्त की रोटी तोड़ेगा। मुए से कोई काम भी नहीं करा सकते हैं।
कथावाचक	<b>दर्शकों से</b> वह चार-पाँच दिन रहा, खाने को कुछ-न-कुछ पा ही जाता। वह कोई-न-कोई काम करने की कोशिश करता, पर उससे होता नहीं। <b>रजुआ घर से बाहर जाता दिखाई देता है।</b> और एक दिन घर आने पर रजुआ नहीं दिखाई पड़ा।
कथावाचक	अरे रजुआ कहाँ गया? तुमने भेजा है कहीं, वह भी इस हालत में ?
पत्नी	वह अपनी तबीयत से पता नहीं कब कहीं चला गया।
कथावाचक	इधर उधर खोजने का प्रयास करता है। <b>दर्शकों को संबोधित कर।</b> वह कहीं गया न था, बल्कि मुहल्ले ही में था। लेकिन अब वह बहुत कम दिखाई पड़ता। मैंने उसको एक-दो बार सड़क पर पैर घिसट-घिसटकर जाते हुए देखा। संभवतः वह अपना पेट भरने के लिए कुछ-न-कुछ करने का प्रयत्न कर रहा था। और फिर एक दिन मैंने उसे खण्डहर में <b>पुनः</b> पड़ा पाया। मैंने आवाज दी। पर वह सो रहा था, थक हार कर लौट कर आया तो शिवनाथ बाबू से भेंट हो गई।
	<b>शिवनाथ बाबू अपने दरवाजे पर बैठ अपने शरीर में तेल की मालिश करवा रहे हैं।</b>
कथावाचक	नमस्कार। रजुआ खण्डहर में क्यों पड़ा हुआ है? उसे फिर हैजा हुआ है क्या?
शिवनाथ बाबू	गोली मारिए साहब, आखिर कोई कहाँ तक करे? अब साले को खुजली हुई है।
कथावाचक	खुजली ?
शिवनाथ बाबू	जहाँ जाता है, खुजलाने लगता है। कौन उससे काम कराये! फिर काम भी तो वह नहीं कर सकता। साहब, अभी दो-तीन रोज की बात है, मैंने कहा एक गगरा पानी ला दो। गया जरूर, लेकिन कुएँ से उतरते समय गिर गये बच्चू। पानी तो खराब हुआ ही, गगरा भी टूट-पिचक गया। मैंने तो साफ-साफ कह दिया कि मेरे घर के अंदर पैर न रखना, नहीं तो पैर तोड़ दूँगा।
कथावाचक	बीमार आदमी के साथ ?
शिवनाथ	गरीबों को देखकर मुझे भी दया-माया सताती है। पर अपना भी तो देखना है। <b>जाते हैं।</b>
कथावाचक	<b>दर्शकों से</b> मैं चुपचाप घर लौट आया। इस बार मेरी हिम्मत नहीं हुई कि जाकर उसे देखूँ या उससे हालचाल पूछूँ। <b>पत्नी से</b> तुमने रजुआ से कुछ कहा-सुना तो नहीं था?’
पत्नी	<b>अचकचाकर देखती है, फिर तिनककर</b> क्या करती, रोग को पालती? कोई मेरा भाई-बंधु तो नहीं।
कथावाचक	दर्शकों से मैं क्या कहता? रजुआ को भयंकर खुजली हो गयी थी, लेकिन उसने मुहल्ला नहीं छोड़ा। वह अक्सर खण्डहर में बैठकर अपने शरीर को खुजलाता रहता। खाने की आशा में वह इधर-उधर चक्कर भी लगाता। कभी-कभी वह मेरे घर के सामने लकड़ीवाले पंडित के यहाँ आता और पंडितजी थोड़ा सत्तू दे देते। मैंने भी एक-दो बार अपने लड़के के हाथ खाना भिजवा दिया। इस तरह उसके पेट का पालन होता रहा। उसका चेहरा भयंकर हो गया था—एकदम पीला और हाथ-पैर जली हुई रस्सी की तरह ऐंटे हुए। वह बाहर कम ही निकलता और जब निकलता तो उसको देखकर एक अजीब दहशत-सी लगती, जैसे कोई नर-कंकाल चल रहा हो।
<b>दृश्य : दस</b>	
	बारिश का दृश्य। कथावाचक कुछ फाईले लेकर टेबिल पर रखता है। आलस के साथ कुरसी उनींदा सा होकर आँखें बंद कर लेता है। आहट होती है। आँखें खोलकर बाहर झाँकता है। एक तेरह-चौदह वर्ष का लड़का कमरे में झाँकता है।
कथावाचक	डपट कर कौन है रे, क्या चाहता है?
लड़का	कमरे में प्रवेश कर निधड़क बोला, सरकार, रजुआ मर गया। उसी के लिए आया हूँ। हँसता है।

कथावाचक आश्चर्य से मर गया? कब मरा? कहाँ मरा?

लड़का **हँसते हुए, कार्ड निकाल कर**, हाँ, सरकार, मर गया। मालिक, इस कार्ड पर उसके गाँव एक चिट्ठी लिख दीजिए।

कथावाचक **स्वगत** मैंने इसके आगे रजुआ के संबंध में कुछ न पूछा। मैं अचानक डर गया कि यदि मैंने मामले में अधिक दिलचस्पी दिखायी तो हो सकता है कि मुझे उसकी लाश **फूँकने** का भी प्रबंध करना पड़े। **पोस्टकार्ड लेकर**, इस पर क्या लिखना होगा? उसके गाँव का क्या पता है?

लड़का **ढीठ स्वर में** मालिक, रामफिर के भजनराम बरई के यहाँ लिखना होगा। लिख दीजिए कि गोपाल मर गया।

कथावाचक गोपाल!

लड़का जी, वहाँ तो उसका यही नाम है।'

कथावाचक **कथावाचक ने पोस्टकार्ड पर तेजी से मजमून लिखा और पत्रा को लड़के के हवाले कर दिया।**

कथावाचक **दर्शकों से** मैं लड़के से पूछना चाहता था कि तू कौन है? रजुआ कहाँ मरा? उसकी लाश कहाँ है? परंतु मैं कुछ नहीं पूछ सका जैसे मुझे काट मार गया हो। सच कहता हूँ, रजुआ की मृत्यु का समाचार सुनकर मेरे हृदय को अपूर्व शांति मिली, जैसे दिमाग पर पड़ा हुआ बहुत बड़ा बोझ हट गया हो। उसको देखकर मुझे सदा घृणा होती थी और यह सोचकर कष्ट होता था कि इस व्यक्ति ने सदा ऐसे प्रयास किये, जिससे इसको भीख न मांगनी पड़े। और उसको भीख मांगनी भी पड़ी है तो इसमें उसका दोष कतई नहीं रहा है। मैंने उसकी दशा देखकर कई बार क्रोधवश सोचा है कि यह कम्बख्त एक ही मुहल्ले से क्यों चिपका हुआ है? घूम-घूमकर शहर में भीख क्यों नहीं मांगता? मुझे कभी-कभी लगता है कि वह किसी का मुहताज न होना चाहता था और इसके लिए उसने कोशिश भी की जिसमें वह असफल रहा। चूंकि वह मरना न चाहता था, इसलिए जोंक की तरह जिंदगी से चिपटा रहा। लेकिन लगता है, जिंदगी स्वयं जोंक-सरीखी उससे चिमटी थी और धीरे-धीरे उसके रक्त की अंतिम बूंद तक पी गयी।

## दृश्य : ग्यारह

**दूर से कबीर का पद सुनाई देता है।**

गगन घटा घहरानी साधे पूरब दिस से उठी है बदरिया रिमझिम बरसत पानी  
गगन घटा घहरानी, साधो, गगन घटा घहरानी .  
पूरब दिसि से उठी बदरिया, रिमझिम बरसत पानी .  
आपन -आपन मेंड़ सम्हारो, बह्यो जात यह पानी .  
मन के बैल, तुरत हरवाहा, जोत खेत निरबानी .  
दुबिधा दूब छोल करु बाहर, बोव नाम को घानी .

एक रजुआ को मरे तीन-चार दिन हो गये थे।

दो साला, एक डॉट में सब काम कर देता था।

एक अभी पिछले हफ्ते ही घर से लहसुन मांग कर ले गया था। साले को मैंने दो गन्दी गाली भी दी।

दो गुरु, गाली खा के तो नहीं मर गया।

एक अबे ज्यादा बकवास नहीं ...**विराम**

पंडित जी संधान में कहीं कोई उच नीच रह गई होगी। शनीचरी देवी कुपित हो गई होगी बाबू। **शिवनाथ बाबू और कथावाचक गुजरते हैं।** अरे बाबू नमस्कार।

शिवनाथ आपकी सैर हो गई ?

कथावाचक हाँ, बस लौट ही रहा हूँ।

शिवनाथ **दुकान की तरफ देखकर** अरे यह कचहरी अभी तक लगी है।

पंडित रजुआ के बारे में बात कर रहे थे, सब के जूते लात खाये पर एक शब्द मुख से नहीं निकाला।

शिवनाथ सच में बहुत दुख हुआ।

कथावाचक मैं तो उसे अपने घर लाने गया था।

एक ऐसे लगा जैसे घर का ही कोई आदमी गुजर गया हो।

दो हमसे तो दोपहर भोजन करते नहीं बना।

पंडित जी अब होनी का कौन टाल सकता है।

शिवनाथ जो भी हो, पर आदमी वह ईमानदार था।

एक तभी आप उसे जूतियाये थे ?

कथावाचक शिवनाथ बाबू सुनकर चल देते हैं। सब हैंसते हैं। कथावाचक अपने घर में आकर बैठा है। दर्शकों से रात के करीब आठ बजे थे और मैं अपनी बाहरी ओसारे में बैठा था। आसमान में बादल छाये थे और सारा वातावरण इतना शांत था जैसे किसी षड्यंत्रा में लीन हो। बगल की चौकी पर रखी धुंधली लालटेन कभी-कभी चकमक कर उठती और उसके चारों ओर उड़ते पतंगे कभी कमीज के अंदर घुस जाते, जिससे तबीयत एक असह्य खीझ से भर उठती। कथावाचक भीतर जाने के लिये उठता है। एक छाया दिखती है। वह चौंक कर डरता है। रजुआ की छाया साफ दिखने लगती है। आखें फाड़कर कथावाचक छाया को देखता है। स्वगत सच कहता हूँ यदि मैं भूत-प्रेत में विश्वास करता तो चिल्ला उठता, 'भूत-भूत!' रजुआ आगे बढ़ता है। तो रजुआ जिन्दा है ?

रजुआ कथावाचक के पास आता है।

रजुआ परेशानी भाँपकर बोला, सरकार, मैं मरा नहीं हूँ, जिंदा हूँ। हैंसने लगता है।

कथावाचक गंभीरतापूर्वक तब वह लड़का क्यों आया था?

रजुआ दाँत निपोरकर सरकार, वह गुदड़ी बाजार के बचन-राम का लड़का है। मैंने ही उसको भेजा था। बात यह हुई सरकार, कि मेरे सिर पर एक कौवा बैठ गया था। हजूर, कौवे का सिर पर बैठना बहुत अनसुभ माना जाता है। उससे मौअत आ जाती है।

कथावाचक 'फिर गाँव पर चिट्ठी लिखने का क्या मतलब?

रजुआ समझाते हुए, सरकार, यह मौअतवाली बात किसी सगे-संबंधी के यहाँ लिख देने से मौअत टल जाती है। भजनराम बरई मेरे चाचा होते हैं। मालिक, एक और कार्ड है, इस पर लिख दें, सरकार कि गोपाल जिन्दा है, मरा नहीं।

कथावाचक स्वगत मैंने पूछना चाहा कि तू क्यों नहीं आया, लड़के को क्यों भेज दिया। लेकिन यह सब व्यर्थ था। संभवतः उसने सोचा हो कि उसका मतलब कोई न समझे और लोग बात को मजाक समझकर कहीं दुरदुरा न दें।

कथावाचक पोस्टकार्ड लेकर उस पर लिखता है और पोस्टकार्ड लौटाता है। रजुआ का प्रस्थान। दर्शकों से पोस्टकार्ड लौटाते समय मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा। उसके मुख पर मौत की भीषण छाया नाच रही थी और वह जिन्दगी से जोंक की तरह चिमटा था—लेकिन जोंक वह था या जिन्दगी ? वह जिन्दगी का खून चूस रहा था या जिन्दगी उसका ? मैं तय न कर पाया।

दूर कहीं से गाने की आवाज आती है।

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।।

चंदन काठ के बनल खटोला

ता पर दुलहिन सूतल हो।

आये जम राजा पलंग चढी बैठा

नैनन अंसुवा टूटल हो

चार जाने मिल खाट उठाइन

चहुँ दिसि धूं धूं उठल हो

